Shodhshauryam, International Scientific Refereed Research Journal
© 2019 SHISRRJ | Volume 2 | Issue 5 | ISSN : 2581- 6306

हिन्दी साहित्य में मराठी दलित आत्मकथा की विकास यात्रा

प्रसेन जीत सागर
असिस्टेन्ट प्रोफेसर (हिन्दी विभाग)
डॉ0 राजेश्वर सेवाश्रम महाविद्यालय
ढिंढुई, प्रतापगढ़, उत्तर प्रदेश, भारत।

सारांश– दलित चेतना के विकास में दलित पैंथर संगठन का बड़ा योगदान है। पैंथर दलितों पर अत्याचार, अन्याय करने वालों के खिलाफ खड़े हो गये, पैंथर नया था, जोश था। दलितों पर अत्याचार करने वालों में दहशत पैदा हो गयी। पैंथर की शुरूआत ही देवताओं व धर्मों को गालियॉ देकर होती थी। दलित पैंथर की बैठकें, सभाएं, मोर्चे और कार्यकर्ताओं के साथ चर्चाएं होने लगी थी, इसी प्रक्रिया ने साहित्य सृजन के लिए प्रेरित किया, दलित साहित्य और दलित आन्दोलन सक्रिय केन्द्र बन गया। मुम्बई, औरंगाबाद और नागपुर जैसे शहर। दलित पैंथर और दलित साहित्य दलितों के स्वतंत्र अस्तित्व की आवश्यकता महसूस कराता है। मराठी साहित्य में दलितों का कोई स्थान नहीं वह सवर्णों का साहित्य था।

मुख्यशब्द– हिन्दी, साहित्य, मराठी, दलित, आत्मकथा, अत्याचार।

दलित विमर्श की जो धारा भारतीय साहित्य में उभरकर आई है उसका श्रेय निःसन्देह मराठी भाषा में रचित साहित्य को जाता है। मराठी भाषी क्षेत्र में ही सर्व प्रथम दलित आन्दोलन प्रारम्भ हुआ तथा बाद में साहित्यिक अभिव्यक्ति के रूप में विस्तृत धरातल पर उभरकर आया। साहित्य की अन्य विधाओं की भाँति आत्मकथा विधा सशक्त रूप में दिखाई देती है। इस विधा ने दलित साहित्य को विश्व पटल पर उभारने में अहम् भूमिका निभाई है। मराठी भाषा में दलित साहित्य ने क्रान्तिकारी विचारों को बड़े पटल पर और प्रचुर साहित्यकारों के माध्यम से वाणी दिलाने का प्रयास किया। औरंगाबाद से 1960 में अस्मिता और अस्मितादर्श पत्रिकाओं के माध्यम से दलित साहित्य ने अपनी पहचान कायम की। अस्मिता त्रैमासिक के संस्थापक सम्पादक डॉ0 वानखेड़े थे। इसी पत्रिकाओं के माध्यम से पहली बार मराठी के केशव मेश्राम, बंधु माधव, राजा ढाले, नामदेव, योगीराज वाघमारे, बाबूराव बागुल आदि लेखकों की संक्षिप्त आत्मकथा प्रकाशित हुई और तब से मराठी के अनेक लेखकों ने आत्मकथा लेखन का कार्य प्रारम्भ किया। सर्वप्रथम मराठी भाषा में डॉ0 अम्बेडकर का आत्मकथ्य 'मेरा जीवन' शीर्षक से 'जनता' पत्र 6 नवम्बर 1954 के अंक

में प्रकाशित हुआ जो निश्चित रूप से किसी दलित चिन्तक की पहली आत्मकथा है जो पत्र में प्रकाशित हुई। डॉ0 अम्बेडकर की यह आत्मकथा दलित साहित्य की ऐतिहासिक धरोहर है। जिससे दलित साहित्यकार प्रेरणा लेकर दलित आत्मकथा विधा को विकसित कर रहे हैं। डॉ0 ओम प्रकाश वाल्मीकि का मानना है कि ''डॉ0 अम्बेडकर की आत्मकथा 'मी कसा झालो' (मैं कैसे बना) से प्रेरणा लेकर दलित सहित्यकारों ने आत्मकथा विधा विकसित की है, जो समाज को दर्पण दिखाती है कि वह समाज जिसमें हम रहते हैं कितना आमानुषिक है।''[1]

सन् 1967 में मराठवाड़ा से दिवाली विशेषांक पत्रिका में दलित साहित्य पर सवर्णों और दलित वर्ग के लेखकों एवं समीक्षकों के विचारों को एक साथ प्रकाशित किया। इन पत्रिकाओं के माध्यम से दलित साहित्य एक आन्दोलन के रूप में उभर कर आता है। साहित्य की अन्य विधाओं की तरह दलित आत्मकथा लेखन का प्रभाव स्पष्ट रूप से दिखायी देता है। 1960 में मराठी लेखन अपने प्रारम्भिक अवस्था में था, लेकिन सन् 1980 तक अधिक समृद्ध दिखाई देता है। डॉ0 अम्बेडकर के नेतृत्व में अनेक सामाजिक, जाति उन्मूलक आन्दोलन चलाये गये और फिर साहित्य में दलित आत्मकथाओं का आगमन हुआ। 1992 तक मराठी में अनेक आत्मकथाएं आ चुकी थी। मराठी में अम्बेडकर और दलित पैंथर की वैचारिकता और आक्रोश का प्रभाव दिखाई देता है। दक्षिण में दलितों की पीड़ा अभिव्यक्त करने का साहित्यिक माध्यम आत्मकथा विधा प्रभावशाली हुआ तो हिन्दी पट्टी भी इससे अछूता नहीं रहा। आत्मकथा लेखन कार्य समृद्ध होने लगा। आत्मकथा विधा को सामाजिक परिवर्तन की लहर के रूप में देखा जाने लगा।

हिन्दी में मराठी से अनुदित दया पवार की बलुंत (अछूत) 1978 सबसे पहले लिखी गयी, फिर तो आत्मकथाओं का एक सिलसिला ही चल पड़ा । जिसने दया पवार को केवल मराठी साहित्य का ही नहीं बल्कि भारतीय दलित साहित्य का इतिहास पुरूष बना दिया । ''मराठी दलित साहित्य में आत्मकथाएं सर्वाधिक चर्चित हुई, उसकी आवश्यकता भी थी, क्योंकि जातिगत घृणा, अपमान, उत्पीड़न और अपृश्यता के विषैले तीरों का जितना तीव्र और गहरा दंश महाराष्ट्र के दलितों को सहना पड़ा है वह पाशविक और अमानवीयता की पराकाष्ठा है । भद्रता और सौम्यता का लिवास ओढ़े उस समाज के अमानवीय, क्रूर और वीभत्स चेहरे को बेपरदा करके दुनिया को दिखाना आवश्यक था, ताकि वह अपनी जाहिल करतूतों पर शर्मसार हो और दुनिया को अपना मुँह दिखाने लायक रहने के लिए स्वयं को सुधारने का प्रयास कर सके। लोकतांत्रिक गणराज्य में सामाजिक लोकतंत्र की स्थापना की दिशा में, आत्मकथाओं के रूप में दलित साहित्य का महत्वपूर्ण योगदान है।''[2]

मराठी की दलित आत्मकथाएँ हिन्दी में ही नहीं, बल्कि भारतीय तथा अन्य विदेशी भाषाओं में खूब अनुवाद हुआ और चर्चित रही है। मराठी में ही फुले–अम्बेडकर हुए मराठी साहित्य के निर्माण का एक बड़ा कारण यह भी रहा है । यहॉ युवाओं का आन्दोलन ज्यादा हुआ, जिससे वहॉ समाज अधिक सक्रिय हुआ। यहॉ दलित पैंथर के आन्दोलन को दलित युवकों ने संगठित होकर बहुत संघर्ष के साथ आगे बढ़ाया, मराठी में दलित युवकों का आन्दोलन और फुले–बाबा साहब के विचारों के परिणाम के कारण मराठी में दलित साहित्य बड़े पैमाने पर दिखाई देता है । मराठी दलित आत्मकथाओं में तेवर बड़ा तीखा रहा है। यह यहॉ के आन्दोलनों की देन है। पैंथर ने दलित आन्दोलन और दलित साहित्य को आगे बढ़ाने में अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया। आन्दोलनों से प्रेरणा लेकर दलित साहित्य लिखा गया। दलित लेखक केवल लेखक ही नहीं हैं, बल्कि वह एक कार्यकर्ता भी था। अन्याय, अत्याचार के

खिलाफ आवाज उठाने से लेखकों में लिखने की प्रेरणा उत्पन्न होती है। महाराष्ट्र में दलित साहित्य के निर्माण में दलित पैंथर की अहं भूमिका रही है ।

मराठी साहित्य के विकास में पैंथर ने एक नया स्वर दिया। पैंथर के पहले दलित आन्दोलन और दलित साहित्य याचना से भरा था। पैंथर में ओज था, इसलिए वे दया और भीख नहीं मांगते हैं। वे जागृत हो चुके हैं, उन्होंने ने हुंकार भरी हम अपना अधिकार छीन कर लेंगे। ''आधुनिक लोकतांत्रिक अधिकार, अस्मिता और चेतना सम्पन्न दलित, आदिवासी और स्त्री समाज, अब अपनी साहित्यिक अभिव्यक्ति लगातार कर रहा है। सबसे महत्वपूर्ण बात है कि अब यह साहित्य इस समाज की सामाजिक मुक्ति के आन्दोलन का साहित्य बनकर अभिव्यक्त हो रहा है और यही इस साहित्य का लक्ष्य और उद्देश्य है । इस सामाजिक मुक्ति में दलित साहित्य उस चिन्तन धारा को अपनी वैचारिकी का आधार बनाती है, जो मानवीय मुक्ति के लिए संघर्ष करने वाली चिन्तन धारा रही है, जिसके हीरो बाबा साहब डॉ0 अम्बेडकर हैं। इसी वैचारिकी की चिन्तन परम्परा से दलित समाज प्रेरणा लेकर दलित चेतना सम्पन्न और दलित समाज की अस्मिता की पहचान करते हुए दलित साहित्य में आत्मकथात्मक अभिव्यक्त करता है, जिसकी पहली साहित्यिक अभिव्यक्ति मराठी साहित्य में होती है।''[3]

समानता, स्वतन्त्रता और बन्धुत्व के सन्देश को ज्योतिबा फुले और डॉ0 अम्बेडकर ने लोकतान्त्रिक जीवन मूल्य और अधिकारों के प्रति सचेत किया। दलितों और आदिवासियों के अन्दर चेतना और अधिकार को जगाया। उनके अन्दर यह भाव पैदा किया कि हम मनुष्य हैं हमें वे सभी मानवीय अधिकार मिलने चाहिए। मराठी दलित साहित्य महात्मा फुले की समृद्ध सोच के परिप्रेक्ष्य में, डॉ0 अम्बेडकर की विचारधारा के प्रभाव में सीधे आन्दोलन के गर्भ से उत्पन्न हुआ और ग्रामीण स्तर तक भी लोक–साहित्य, लोक–कला, नाटक, जलसा आदि के जरिये दलित चेतना के विकास का एक कारगर हथियार बना। दरअसल मराठी दलित नेतृत्व सुधारवादी न होकर परिवर्तनवादी रहा।''[4]

मराठी दलित साहित्य में दलित चेतना और दलित आन्दोलन का विकास प्रखर गति से हुआ। जनवाद और प्रगतिवाद एवं सास्कृतिक मुद्दों को प्राथमिकता के आधार पर उभारा गया है। साहित्य सृजन डॉ0 अम्बेडकर के विचारधारा पर ही आधारित है। मराठी दलित साहित्य, साहित्य में व्यापक और दूरदर्शी दृष्टि दिखाई देती है। मराठी दलित साहित्य में दलित चेतना आन्दोलन, संघर्ष, शिक्षा, संगठन और आत्मसम्मान के आधार पर समाज में आमूल–चूल परिवर्तन के लिए संघर्षरत था । राजनीतिक भागीदारी की आकांक्षा से भरा हुआ है। मराठी दलित साहित्यकारों ने इसे तर्कपूर्ण और सशक्त ढंग से साहित्य में अभिव्यक्त किया है। ''महाराष्ट्र में दलित नेता और साहित्यकार अपने बल पर और अपने संगठन के आधार पर डॉ0 अम्बेडकर के नेतृत्व में उनके विचारों से लैस हो सामाजिक के साथ–साथ राजनीतिक प्रतिबद्धता और पुष्ट दृष्टिकोण के साथ उभरे। इसी कारण वहॉ दलित साहित्य एक क्रान्तिकारी और स्पष्ट समझ के साथ विकसित हुआ और आज वह महाराष्ट्र में मुख्यधारा का साहित्य बन गया है।''[5]

मराठी में दलित साहित्यकारों, कतिपय बुद्धिजीवियों, नौकरशाहों एवं नेताओं ने दलित अस्मिता के लिए अनेक संघर्ष किये, दलित संस्थाओं की भूमिका भी अग्रणी रही है। दलित संगठनों ने ही भारत सरकार पर दबाव डालकर डॉ0 अम्बेडकर के ''सम्पूर्ण वाड्मय'' को छापने के लिए मजबूर किया। अस्सी के दशक में अनेक दलित साहित्यक पत्रिकाएं भी निकाली जाने लगी । डॉ0 अम्बेडकर के नाम से फेलोशिप और राष्ट्रीय आवार्ड दिये गये। झलकारी बाई आवार्ड, दिल्ली में 'दलित साहित्य मंच, सेन्टर फॉर अल्टरनेटिव दलित मीडिया, कदम 1990,

अभिमूक नायक, अखबार, दलित साहित्य प्रकाशन संस्था, डॉ0 श्यौराज सिंह बेचैन के नेतृत्व में 'दलित राइटर्स कोरम,' नागपुर में डॉ0 विमल कीर्ति ने 'फुले अम्बेडकरवादी लेखक संघ का गठन, नागपुर में ही सुश्री कुमुद पांवड़े ने ऑल इण्डिया प्रोग्रेसिव वीमेन आर्गेनाइजेशन नागपुर के तत्वाधान में 2 अक्टूबर 1995 को दलित महिला लेखिकाओं का प्रथम सम्मेलन आयोजन किया गया। नागपुर में ही हिन्दी दलित लेखिकाओं को एक मंच पर लाने के लिए 'दलित लेखिका संघ' की योजना बनी, जिसका प्रथम सम्मेलन दिल्ली में 03 जनवरी 1996 को रजनी तिलक की पहल पर हुआ।

मराठी दलित साहित्य में संवेदनात्मक अनुभूतियों की अभिव्यक्ति है जो घृणा, वंचना, तिरस्कार, उपेक्षा, अपमान, उत्पीड़न, अन्याय, असमानता, अवमानना भोगते हुए प्रतिरोध और प्रतिकार के रूप में आक्रोशित चेतना के गहराई से प्रस्फुटित हुआ है। मराठी साहित्य में जो विद्रोह है वह अन्य भाषा में नहीं है। यहॉ साहित्य को कला के लिए नहीं, बल्कि साहित्य को सामाजिक परिवर्तन के औजार के रूप में देखने को मिलता है। दलित साहित्य उन मान्यताओं पर प्रहार लेखन है, जो अन्याय और अत्याचार के वैचारिक स्रोत हैं। मराठी दलित साहित्य ने परम्परागत–मान्यताओं को ध्वस्त कर साहित्य को नया चेहरा दिया। मराठी की दलित आत्मकथाएं हिन्दी ही में नहीं अपितु भारतीय तथा विदेशी भाषाओं में भी चर्चित हुई । आधुनिक दलित साहित्य की नींव में आत्मकथा लेखन की भूमिका सबसे प्रभावशाली रही है। बाबूराव बागुल की मराठी में 'जेव्हा भी जात चोरली' अर्थात 'जब मैंने जाति छिपाई' नामक कहानी संग्रह ने मराठी दलित साहित्य को युगान्तकारी बना दिया। 1960 से 1990 तक यहॉ के पाठकों ने अन्य भाषा की तुलना में मराठी दलित साहित्य की अनेक विधाओं को, अनेक लेखकों को पढ़ा, चर्चा किया, परन्तु इस परिप्रेक्ष्य में मराठी भाषा की आत्मकथा ज्यादा चर्चित रही है।

''यह बात अपने–आप में सही है कि हिन्दी में दलित आत्मकथाएं लिखने की शुरूआत जब हुई तब मराठी दलित आत्मकथाएं हिन्दी में अनुदित होकर हिन्दी सवर्ण समाज के साथ दलित समाज पर भी दस्तक दे चुकी थी। उन आत्मकथाओं को दलितों ने पढ़ा। वे दलित–साहित्य सृजन पहले से ही कर रहे थे। उनके हाथ में कलम थी और हृदय में हाहाकार, उन्हें बल मिला और प्रेरणा भी। हिन्दी दलित कथाकारों को आत्मकथा लिखने के लिए एक प्रेरक तत्व और था, वह यह कि बंबई, औरंगाबाद और विशेष रूप में नागपुर में आयोजित सभा, सम्मेलन और गोष्ठियॉ, जिनमें बड़ी संख्या में दिल्ली, उत्तर प्रदेश, राजस्थान आदि से दलित साहित्यकार तथा कार्यकर्ता पहुॅचते थे।''[6]

दलित चेतना के विकास में दलित पैंथर संगठन का बड़ा योगदान है। पैंथर दलितों पर अत्याचार, अन्याय करने वालों के खिलाफ खड़े हो गये, पैंथर नया था, जोश था। दलितों पर अत्याचार करने वालों में दहशत पैदा हो गयी। पैंथर की शुरूआत ही देवताओं व धर्मों को गालियॉ देकर होती थी। दलित पैंथर की बैठकें, सभाएं, मोर्चे और कार्यकर्ताओं के साथ चर्चाएं होने लगी थी, इसी प्रक्रिया ने साहित्य सृजन के लिए प्रेरित किया, दलित साहित्य और दलित आन्दोलन सक्रिय केन्द्र बन गया। मुम्बई, औरंगाबाद और नागपुर जैसे शहर। दलित पैंथर और दलित साहित्य दलितों के स्वतंत्र अस्तित्व की आवश्यकता महसूस कराता है। मराठी साहित्य में दलितों का कोई स्थान नहीं वह सवर्णों का साहित्य था। ऐसे साहित्य का विरोध हुआ, फलतः यह भावना बलवती हुई कि हमारा आन्दोलन अलग और हमारा साहित्य भी अलग। आत्मकथा मराठी दलित साहित्य की सशक्त विधा है। मराठी भाषा के दलित लेखकों में सबसे पहले दया पवार ने अपनी आत्मकथा बलुंत (अछूत) लिखी, इसी के बाद आत्मकथा लेखन का सिलसिला

आज तक जारी है। शरण कुमार लिम्बाले कृत अक्करमाशी (दोगला), लक्ष्मण गायकवाड़ कृत उचल्या (उचक्का), माधव कोंडविल्कर मुकाम पोस्ट (टूटी जिन्दगी), लक्ष्मण माने उपरा (पराया), डॉ0 अमिताभ कृत टीस, शान्ताबाई कांबले कृत मेरे जन्म की चित्रकथा पावड़े कृत अन्तस्फोट, मुक्तासर्वगोड़ कृत बन्द दरवाजे, रामनगरकर कृत रामनगरी, रमाकान्त जाघव कृत रमाकान्त की यादें, मुरलीधर जाघव कृत कार्यकर्ता, शशिकान्त तासागॉवकर कृत घराना लोट नाटकों, शंकर राय खरात कृत तराल–अंतराल, बेबी कांबले कृत जीवन हमारा। अनिल अवचट कृत हम भी जिन्दा हैं, दादा साहब मोरे की गबाड़ी (डेराडंगर) किशोर शांता बाई काले कृत छोरा कोल्हाटी का, शंकर राव खरात की तराल–अंतराल, प्रा0ई0 सोनकांबले कृत यादों के पंक्षी, बसंत मून कृत बस्ती आदि। इनमें से अधिकांश आत्मकथाओं का मराठी से हिन्दी में अनुवाद भी हुआ है और वे छपी भी हैं। ये सभी आत्मकथाएं दलित रचनाकारों की आप बीती पर आधारित है। इसी से स्पष्ट है कि दलित साहित्य कल्पना के बजाए भोगे हुए यथार्थ को महत्व देता है।

सन्दर्भ

1– ओम प्रकाश वाल्मीकि, दलित साहित्य का सौन्दर्य शास्त्र, राधा कृष्ण प्रकाशन, दिल्ली, संस्करण–2015 पृ0सं0 19

2– हरिनारायण, कथादेश, दलित साहित्य विशेषांक, दिलशाद गार्डन, दिल्ली, सितम्बर 2019 पृ0सं0 53

3– जय प्रकाश कर्दम, दलित साहित्य (वार्षिकी) सम्यक प्रकाशन नई दिल्ली, 2015 पृ0सं0 102, 103

4– डॉ0 शरण कुमार लिंबाले अनुवादक रमणिका गुप्ता, दलित साहित्य का सौन्दर्य शास्त्र, वाणी प्रकाशन नई दिल्ली संस्करण, 2016, पृ0सं0 10

5– वही पृ0सं0 15

6– मोहन दास नैमिशराय, हिन्दी दलित साहित्य, साहित्य अकादमी नई दिल्ली, संस्करण 2018 पृ0सं0 189